ISSN 2249-1635

अक्तूबर-नवम्बर-दिसम्बर 2012 A National, Registered, Recognized Refereed Hindi Quarterly LOK-YADNYA

साक्षात्कार

हिन्दी भाषा तथा साहित्य को पुणे की देन

सुप्रतिष्ठित कवयित्री मालती शर्मा से शेख सिराज हसन की बातचीत

15 नवम्बर 1938 को जन्मी डॉ.मालती शर्मा एक उत्कृष्ट कवयित्री, बालसाहित्यकार, आत्मकथालेखक, अनुवादक, ललित-निबंधकार, कहानीकार तथा प्रतिभासंपन्न लोकसाहित्यकार रही है। प्रमुख रूप से लोकवार्ता, लोकसांस्कृतिक कविता, समीक्षा, शोध, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याएँ, नारी-समस्याएँ व बालसाहित्य पर उनका विशेष अधिकार रहा हैं। उनकी प्रकाशित साहित्य-कृतियाँ कुछ इस प्रकार हैं - ''संस्कृति से सरोकार'' 1981 लोकसांस्कृतिक विवेचन, ''निर्वासन की आँधी'' काव्यसंग्रह 1981, ''माझी आजी डॉक्टर'' मराठी में लिखित लोक औषधियों पर शोध समाज शिक्षण माला, पुणे से 1986 इ. में प्रकाशित, ''आक्टोपस के पेट में बचा एक बीज'' काव्य 1987 ई. ''सो फिर भादों गरजी'' ललित निबंध 1989, ''दृष्यों के बाहर'' 1990 ई., ''ब्याहुलों की लोकपरंपरा और महादेव का ब्याह'' 1991 ई. तथा बालसाहित्य में ''तीन-द की कहानी'', ''गरम खिचडी की चीख'', ''एक खम्बा सभाग्रह'', ''एक चकवी, एक था चकवा'', ''कोका कोला के झरने'', ''अगा फूलों की नींद तोडी तो'' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। डॉ.मालतीजी आज भी अपनी लेखनी से एक बृहद कार्य ब्रजक्षेत्र से तीन लोकगाथाओं, 1500 लोकगीतों तथा प्रचुर प्रकीर्ण लोकसाहित्य यथा कहावतें, पहेलियाँ, लोककथा चित्र एवं लोकविश्वासों का संग्रह यह संग्रह संशोधन अद्यतन जारी है।

डॉ.राजेंद्र रघुवंशी के अनुसार ''पूना को अपनी साहित्यिक हलचलों का केंद्र बनानेवाली विदूषी श्रीमती मालती शर्मा अपने में स्वयं एक संस्था बन चुकी हैं। पुराने को नए से जोडकर जाँचने की मालती शर्मा की अनुभूती सचमुच अनूठी हैं। भाषा और भाव दोनों पर उनका अनूठा अधिकार है। इनका नीर-क्षीर विवेक उनकी साहित्यिक उपलब्धि का रहस्य हैं। अपने इसी सन्तुलित स्वभाव के कारण वह पल में कलम पकड सकती हैं और पल में करदुली। उनका साहित्यिक रूप सदैव जगमगाता रहता है। वह बोलती हैं वह भी साहित्य।''

डॉ.राजेन्द्र अवस्थी ने जो टिप्पणी दी है वह इतनी यथार्थ है कि सचमुच उनका हर शब्द साहित्य है। साहित्य की इसी जीती-जागती मूर्ती से किया हुआ साक्षात्कार इस बात को और अधिक सार्थक बना देता है।

*** आपके साहित्य लेखन की शुरूआत कहाँ से, किस विधा से हुयी ?**

- मैं स्कूल नहीं गयी। इंटरमीडिएट तक मुझे अपने घर पर ही शिक्षा मिली। मेरे पिताजी एक शिक्षक थे। वैसे तो हमारा परिवार शिक्षित था पर हमारी दादी नहीं चाहती थी कि जहाँ लडके पढने जाते हों वहाँ लडकी नहीं जा सकती। मेरे बचपन में जब मैं देखती की दूसरे बच्चे पढाई करते हैं तो मैं भी होमवर्क के रूप में लोकगीतों का सृजन करती गयी। वैसे तो लोकगीतों से ही मेरे साहित्य सृजन का प्रारंभ होता है।

*** आपने किस-किस विधा में लिखा और कौनसी साहित्यिक विधा आपको विशेष प्रिय है ?**

- देखिए, मैंने लोकवार्ता, कविता, आत्मकथा, लोक-साहित्य, बाल-साहित्य, ललित-निबंध लिखें है। ललित निबंध एक ऐसी विधा जिसका मैं यहाँ उल्लेख करना चाहूँगी - एक शोधछात्र को पीएच-डी के वाइवा को सबसे पहला सवाल पूछा की आप ललित निबंध से आज के समाज के लिए क्या चाहती है तो उन्होंने मेरे ललित निबंध का उद्धारण देते हुए कहा था कि, ''जीवन निरंतरता का जो प्रतीक है- वृक्ष और मेरा पहला निबंध था। ''मृत्यु के मुख में जीवन का पहला वृक्ष'' याने वृक्षों को जो उखाडता है वह जीवन को उखाडता है। उन्होंने कहा मालती शर्मा कहती है - ''अब मैं अपने बेटे को क्या ये आशीर्वाद दूँ की तू ट्राम्बे के अनुमत के हो जाए या तू बेलाइ का इस्तेकांट हो जाए हमारी कौशल्याताई जब आशीर्वाद देती तो कहती थी ''करूण नील से बडा हों, वट विप्रो लेटा हों।'' और हमारी दादी कहती थी ''तुम धूप सी फैलों'' यह बहुत बडी बात है।'' उन्होंने कहा कि ललित निबंध ही है जो हमें जिन्दगी का वास्तविक रूप बताते हैं।

*** आपके जीवन का सबसे सुखद क्षण कौनसा रहा है ?**

- मुझें अब भी याद हैं कि ग्वालियर कॉलेज की हमारी पहली बॅच थी, बिदाई समारोह में गुरूप्रसाद टंडन जो पुरूषोत्तमदास टण्डन के भाई थे। उनके आशीर्वाद से डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन आए हुए थे। उनके करकमलों से दीक्षा समारोह संपन्न हुआ था। जब मैं उनके आशीर्वाद लेने गई तो उन्होंने मुझे यह आशीष दिया ''अप दीपों भव'' जिसका अर्थ होता है ''अपने दीपक खुद बनों'' यह मैं मेरा सौभाग्य समझती हूँ की इतने बडे विद्वान का मुझे आशीष मिला और मुझे इतना आनंद हुआ की मैंने इसी शीर्षक से इस प्रसंग को साहित्य में समाहित भी किया हुआ है।

*** आपके ऊपर सबसे अधिक किस व्यक्ति, विचारसरणी का प्रभाव है और क्यों ?**

- तुलसीदास और कबीर दोनों का और आधुनिक युग में निराला है और थोडासा त्रिलोचन का भी प्रभाव है। परिवार, उसको लेकर जीतनी उत्सुफूर्तता से और व्यापकता से तुलसी ने विचार किया है, मनुष्य के जो रिश्ते है उनका जितना गहरा

रूपवर्णन तुलसी में मिलता है वह संसार के अन्य किसी में नहीं है । तुलसी का जो शब्द-भांडार है वह एक विद्यार्थी के लिए, प्रमाण पढ ले तो हिन्दी भाषा के लिए महत्वपूर्ण है और चलते-चलते मैं आपको ये बताती हूँ- आठ वर्ष की उम्र से मुझे तुलसी की पूरी रामायण कंठस्थ थी, क्योंकि स्कूल का काम तो था नहीं, तुलसी का रामायण पढते थे और कंठस्थ भी करते थे, आज भी मुझे कंठस्थ है । तिसरे वर्ष के छात्रों ने जब मुझे बिदाई दी तब मुझे उपाधी दी थी - ''चलती फिरती रामायण'' और लोग कहते है कि सेक्सपीअर का शब्द-भांडार विपूल है मैं कहती हूँ सेक्सपीअर तुलसी के आगे कहीं नही है ।

*** क्या आपने अनुवाद के क्षेत्र में भी लेखनी चलायी है ?**

- मैंने कविता के अनुवाद किये हैं - स्काटश की कविता का अनुवाद किया है । मराठी की कविता का अनुवाद किया है और नाटकों का भी अनुवाद किया है । शांता शेळके की कविता का अनुवाद किया है । ''आम्रपाली'' नाटक का अनुवाद किया है वह डॉ संजीव शेंडे द्वारा प्रकाशित भी है ।

*** क्या आपकी किसी कृती का विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम में समावेश हुआ है ? या आप चाहती हे ? क्यों -**

- एक कहानी है ''कोका कोला के झरने जिसका छः कक्षा में समावेश हो चुका था । किन्तु विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम में अभी तक समावेश नहीं है । हाँ पर मैं चाहूँगी की ''बागडों से उखडे बबूल'' ललित निबंध का समावेश हो जाए । समीक्षकोंने उसपर लिखा भी है कि यह गद्य का ऐसा रूप है जिसका विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रममें समावेश हो जाए और 'तो फिर भादों तरसी' इसका भी समावेश होना चाहिए ।

जीवन का दर्शन है छोटा-छोटा, छोटी-छोटी चीजों से जीवन के दर्शन की ... उन्होंने भी है जैसे - ... है छोहिसी, ''सौंधी-धरती-...-बीज और बबन हारो गाग...त'' इस पहेली का उत्तर है - ''कलम, दवात और लिखोइयाँ । लिखोइयाँ - लिखनेवाले को कहते है । अब आप मुझे बता दीजिए इस तरह का साहित्य आपको कही नहीं मिलेगा । पेड तो रहेंगे, धरती ..., सूरज, वृक्ष तो रहेंगे ... रहेंगे । ''धरती का मानद मेह'' ... जो है वे धरती का श्रृंगार है इसलिए मैं चाहती हूँ की विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम में इसका समावेश हो जाय । हमारी जो वाचिक परम्परा है लोकसाहित्य की, आनेवाली पीढियाँ इसे समझ जाए आनेवाले पाठकों के सामने यह दर्द, चुभन और हमारी सांस्कृतिक परम्परा ... जाए और आनेवाले समय में इसको जानना बहुत कठीन है।''

*** पुणे की हिंदी भाषा तथा साहित्य को क्या देन है - आपके विचार बताइए ।**

- मैं इसके लिए आपको कहूँ तो -पुणे ने हिन्दी -भाषा तथा साहित्य को बहुत कुछ दिया है यहाँ हरिनारायण व्यास जैसे प्रतिभासंपन्न ..., डॉ.भगीरथ मिश्र, डॉ.आनन्दप्रसाद दीक्षित जैसे समीक्षक, अनेक हिन्दी सेवी-संस्थाएँ है अनेक प्रतिभावान नाम खोज के उपरान्त आपके सामने आएंगे जहाँ हिन्दी साहित्य की हर विधा को छुनेवाली रचनाएँ भी आपको मिलेगी यह एक खोजकार्य का बृहद विषय है ।

मैंने खुद यहाँ पर तीन संस्थाएँ चलायी थी - 'संवाद', 'संस्कृति-लोक' और 'प्लस मायनस झीरो', '...' संस्था काफी चली जिसमें संगोष्ठियों का आयोजन होता था जिसमें पहुँचे हुए साहित्यकार भी शामील होते थे । डॉ.केशव फालके, किशोर वासवाणी, डॉ.केशव प्रथमवीर, गोवर्धन शर्मा, रजनी पाथरे 'राजदान', इंदिरा शर्मा, शरदकुमार व्यास और न जाने कितने हिन्दी सेवक, जिनमें से कुछ तो आज रहें भी नहीं है । और एक महत्वपूर्ण बात मैं कहना चाहूँगी की हरिनारायण व्यास और भगीरथ मिश्रजी का आशीर्वाद मेरे साथ था और मेरी प्रथम पुस्तक की भूमिका दोनों ने लीखी थी ।

मैंने ''आनंद-बाल मासिक'' का भी तीन साल तक संपादन किया पर वह ज्यादा न चल सकी। इसमें सहयोग देनेवाले सशक्त हस्ताक्षर थे - प्रभाकर माचवे, विष्णु प्रभाकर, कमलेश्वर, रामधारीसिंह दिनकर और कई थे।

*** हिन्दी प्रेमियों को आप क्या संदेश देना चाहेंगी ?**

- हिन्दी प्रेमियों को एक बात अवश्य कहना चाहूँगी की हिन्दी से खाली प्रेम मत करो उसका इस्तेमाल करो और मेरा यह व्रत है कि जो अंग्रेजी में निमंत्रणपत्र भेजें वहाँ मैं नही जाती और जहाँ मोमबत्ती बुझायी जाती है वहाँ भी मैं नही जाती हूँ । कपूरचन्द ने अपने बेटे का निमंत्रण मुझे अंग्रेजी में भेजा मैंने कहा कपूर मैं नहीं आऊँगी क्यों नहीं आ रही हो तो मैंने कहा तुमने अंग्रेजी में निमंत्रण भेजा है । तुमने हिन्दी में क्यों नही भेजा तो उसने कहा ओ लडकीवालों का आग्रह था मैंने कहा मैं नही आऊँगी तो उसने कहा मैं क्या करूँ मैंने कहा एक पोस्टकार्ड दो उसपर हिन्दी में निमंत्रण लिखो और फिर मैं आऊँगी देखो, इस्तेमाल से हिन्दी बढेगी उससे प्रेम करने से नहीं । दूसरी चीज यह है कि हिन्दी के लिए मेरा एक नारा है आप लिख लीजिए इसे और इसका उल्लेख भी जरूर कीजिए -

''तुम मुझे देवनागरी हिन्दी दों,
मैं तुम्हें देश की एकता दूँगी ।''

- शोधछात्र
शेख शिराज हसन,
पुणे विश्वविद्यालय,
गणेशखिंड, पुणे-411007
(महाराष्ट्र).

भूल-सुधार

अंतर-राष्ट्रीय शोध जर्नल 'रिसर्च लिंक' के 100 वें अंक के प्रकाशन अवसर पर 'लोकयज्ञ' (जुलाई-सितम्बर 2012) अंक, 'रिसर्च लिंक साहित्य विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया गया था । इसमें प्रकाशित गीत-ग़ज़ल सामग्री का विशिष्ट संपादन एवं चयन वरिष्ठ गीतकार माननीय चन्द्रसेन विराटजी ने किया था । हमें खेद है कि त्रुटिवश उनका नाम गत अंक में प्रकाशित नहीं हो सका था। अतः हम क्षमाप्रार्थी हैं ।

'लोकयज्ञ' और 'रिसर्च लिंक' के सुधी पाठकों के लिए विराटजी का नाम किसी भूमिका और परिचय का मोहताज नहीं हैं । इस अंक में विराटजी की दो ग़ज़ले प्रकाशित कर रहें हैं । -मा.संपादक 'लोकयज्ञ' बीड